उत्तर – मार्च 2024

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृतिपत्रिका से गद्यांश पढ़ें।*

(1) निम्नलिखित वाक्य पूर्ण कीजिए :

उत्तर : (i) मरीज का आराम हराम तब हो जाता है जब – उसे मिलने-जुलने वाले कई बार इतने अधिक आते हैं और उसे परेशान करते हैं।

(ii) जब मिलने वालों का खयाल लेखक को आता है तब – लेखक को लगता है उसकी दूसरी टाँग भी टूट गई।

(2) उत्तर लिखिए :

	उत्तर
(i) हमदर्दी जताने वालों की फिक्र करने वाला	– लेखक
(ii) लेखक को परेशान करने वाले	– हमदर्द
(iii) मरीज को मिलने के संबंध में यहाँ समय का बंधन पाला जाता है	– जनरल वार्ड
(iv) मरीज को इसके कारण नींद नहीं आती	– दर्द

(3) (i) गद्यांश में आई हुई एक समानार्थी शब्द की जोड़ी ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर : समय = वक्त।

(ii) गद्यांश में प्रयुक्त दो उर्दू शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर : (1) मरीज (2) इंतजार।

(4) 'आराम हराम है' इस विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : आराम का अर्थ है सुख-चैन। सुख-चैन की जिंदगी जीना और कोई काम-काज न करना। ऐसी जिंदगी जीने के लिए कोई भी लालायित हो सकता है। पर ऐसी जिंदगी जीने का कोई अर्थ नहीं होता। महत्त्व होता है ईमानदारी से निरंतर कार्यरत रहने और जीवन में कुछ कर दिखाने का। जीवन के हर क्षेत्र में कर्म को ही महत्त्व दिया गया है। कर्मठ व्यक्ति के लिए आराम और आलस्य के लिए कोई स्थान नहीं होता। उसके लिए आराम हराम होता है। 'आराम हराम है' घोष वाक्य हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू का दिया हुआ है, जिन्होंने सदा इस 'घोष वाक्य' का पालन किया था।

प्र. 1. (आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृतिपत्रिका से गद्यांश पढ़ें।*

(1) उत्तर लिखिए :

	उत्तर
(i) समाज में अपनी आजीविका बहुत से लोग इससे चलाते हैं	– शरीर श्रम से
(ii) समाज में अपनी आजीविका थोड़े लोग इससे चलाते हैं	– बौद्धिक श्रम से
(iii) आराम में रहने वाले लोगों के पास यह अधिक है	– संपत्ति
(iv) अनेक लोगों में इसकी आदत नहीं है	– श्रम करने की

सूचना : *कृतिपत्रिका में विकल्प सहित प्रश्न दिए गए हैं। यहाँ विद्यार्थियों के मार्गदर्शन हेतु सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।*

Scanned with ACE Scanner

(2) कृति पूर्ण कीजिए :

उत्तर :

(i)

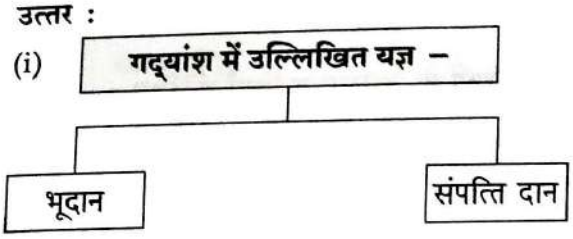

(ii)

(3) (i) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

उत्तर :

उपसर्गयुक्त शब्द	शब्द	प्रत्ययप्रयुक्त शब्द
परिश्रम	← श्रम →	श्रमिक

(ii) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर उसका अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उत्तर : शब्द-युग्म – बड़े-बड़े

वाक्य : चुनाव प्रचार में बड़े-बड़े नेता लगे हुए हैं।

(4) 'करोगे दान पाओगे समाधान' इस विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : किसी को कुछ देने अथवा किसी जरूरतमंद की सहायता कर देने की हमारे यहाँ की पुरानी परंपरा रही है। दान देने को पुण्य काम माना जाता है। दान की महिमा अपरंपार है। छोटे स्तर पर गरीब विद्यार्थियों की पढ़ाई अथवा असहाय व्यक्ति की कन्या के विवाह का खर्च दे देना दान का ही एक रूप है। बड़े स्तर पर अनेक बड़ी-बड़ी शिक्षा-संस्थाएँ तथा आधुनिक साधनों से संपन्न बड़े-बड़े अस्पताल दानदाता धनिकों के दान के पैसों से ही चल रहे हैं। समाज के कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए विभिन्न संस्थाएँ दान देने वाले लोगों के बल पर चल रही हैं। दान की कोई सीमा नहीं है। समाज के कल्याण के लिए आजकल मरणोपरांत देह-दान तक दिए जा रहे हैं। दान देने से मनुष्य को जो आत्म-संतुष्टि (समाधान) मिलती है, वह अद्‌भुत होती है।

प्र. 1. (इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृत्रिपत्रिका से गद्यांश पढ़ें।*

(1) उत्तर लिखिए :

उत्तर :

(i)

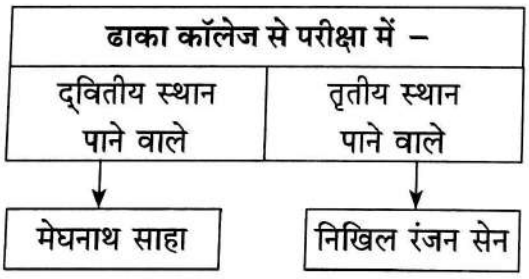

(ii)

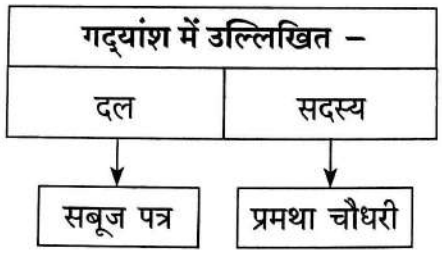

(2) 'ज्ञान देने से ज्ञान बढ़ता है' इस विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। यदि अपने पूरे जीवन-काल में भी कोई हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना चाहे, तो भी यह संभव नहीं है। एक-एक कर ज्ञान प्राप्त करने से ज्ञान में वृद्‌धि होती है। इसके साथ ही प्राप्त ज्ञान को ताजा करते रहना भी जरूरी है। इसके लिए सबसे उत्तम तरीका ज्ञान को बाँटते रहना है। ज्ञान बाँटने से ज्ञान ताजा होता रहता है और नए-नए ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास भी जारी रहता है। इस तरह ज्ञान बाँटने से ज्ञान तो बढ़ता ही है, किसी को कुछ देने का आत्म-संतोष भी होता है।

Scanned with ACE Scanner

प्र. 2. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृत्रिपत्रिका से पद्यांश पढ़ें।*

(1) उत्तर लिखिए :

उत्तर :

वचन में	संचय में	भुजा में	प्रतिज्ञा में
↓	↓	↓	↓
सत्य	दान	शक्ति	टेव

(2) (i) पद्यांश से विलोम शब्द की जोड़ी ढूँढ़कर लिखिए :

उत्तर : संपन्न × विपन्न।

(ii) निम्नलिखित शब्दों के वचन पहचानकर लिखिए :

उत्तर : (1) भारत – एकवचन (2) भुजाएँ – बहुवचन

(3) उपर्युक्त पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : आज भी हम भारतीयों की धमनियों में हमारे महान पूर्वजों का रक्त प्रवाहित हो रहा है। आज भी हमारा देश वैसा ही है। आज भी भारतीयों में वैसा ही साहस है। भारतीय आज भी ज्ञान के क्षेत्र में सबसे आगे हैं। आज भी हम पहले के समान शांति के पुजारी हैं। देशवासियों में वैसी ही शक्ति है। हम उन्हीं आर्यों की दिव्य संतानें हैं।

हम जब तक जिएँ, इसी देश के लिए जिएँ। हमें इसकी सभ्यता और संस्कृति पर अभिमान है और हर्ष है कि हमने इस भूमि पर जन्म लिया है। यह हमारा प्यारा भारतवर्ष है। यदि कभी आवश्यकता पड़े, तो इसके लिए हम अपना सर्वस्व भी न्योछावर कर दें।

प्र. 2. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृत्रिपत्रिका से पद्यांश पढ़ें।*

(1) निम्नलिखित विधान *सत्य* अथवा *असत्य* पहचानकर लिखिए : **उत्तर**

(i) उपर्युक्त पद्यांश में शिशिर ऋतु का वर्णन किया है → असत्य

(ii) श्री राम जी का मन डर रहा है → सत्य

(iii) दुष्ट व्यक्ति का प्रेम स्थिर नहीं होता है → सत्य

(iv) सद्गुण एक-एक करके अपने आप सज्जन व्यक्ति के पास आ जाते हैं → सत्य

(2) (i) निम्नलिखित शब्दों के लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए :

उत्तर : (1) दुष्ट – खल (2) विद्वान – बुध

(ii) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

उत्तर : (1) बूँद → स्त्रीलिंग (2) गिरि → पुल्लिंग

(3) उपर्युक्त पद्यांश से क्रमशः किन्हीं दो पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : 'बरषहिं जलद भूमि ---------- संत सह जैसे।।'

बादल पृथ्वी के नजदीक आकर (नीचे उतरकर) बरस रहे हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे विद्वान व्यक्ति विद्या प्राप्त कर विनम्र हो जाते हैं। बूँदों की चोट पहाड़ों पर पड़ रही है। पहाड़ बूँदों के प्रहार को इस प्रकार शांत भाव से सह रहे हैं, जैसे संत पुरुष दुष्टों के कटु वचनों को सह लेते हैं।

Scanned with ACE Scanner

प्र. 3. (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृत्रिपत्रिका से गद्यांश पढ़ें।*

प्र.

(1) संजाल पूर्ण कीजिए :

उत्तर :

हरे-भरे पहाड़		हल्का-सा शोर करने वाले झरने
	लेखक के मन को सुकून देने वाले प्राकृतिक घटक –	
दीर्घ वृक्ष		पहाड़ों की नीरवता

(2) 'प्रकृति मन को प्रसन्न करती है' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : प्रकृति की सुंदरता मनुष्य को सदा से आकर्षित करती रही है। इसलिए प्रकृति की गोद में कुछ समय बिताने के लिए वह हमेशा लालायित रहता है। पहाड़ों की दूर-दूर तक फैली हरियाली, मुस्कराते फूलों से भरी धरती, ऊँची-नीची सर्पीली सड़कें, फलदार वृक्षों के बगीचे, शोर मचाते दूधिया जलवाले झरने, पहाड़ों का शांत वातावरण, निर्मल जलवाली झीलें, नदियों तथा समुद्र के सुंदर किनारे भला किसका मन नहीं मोह लेते।

प्रकृति की गोद में कुछ समय बिताने से जो प्रसन्नता मिलती है, वह निराली होती है। इसलिए प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थान हमेशा प्रकृति प्रेमियों से भरे रहते हैं।

प्र. 3. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृत्रिपत्रिका से पद्यांश पढ़ें।*

(1) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

उत्तर :

(i) खिलखिलाता फूल	– प्रेरणा
(ii) भीतरी	– कुंठा
(iii) खारा	– जल
(iv) पावन	– मन

(2) 'काँटों के बीच खिलने वाला फूल प्रेरणा देता है' इस विषय पर 25 से 30 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : काँटों के बीच खिलने वाले फूल अपने चारों ओर से काँटों से घिरे होते हैं। फिर भी उन्हें इसकी कोई चिंता नहीं होती। वे उसी तरह अपनी डाल पर मस्ती से झूलते, हँसते, खिलखिलाते हुए अपनी छटा बिखरते रहते हैं, जैसे सामान्य स्थिति में खिले हुए फूल करते हैं। वे काँटों की परवाह नहीं करते। काँटों के बीच खिलने वाले फूल का यह साहस प्रेरणादायी होता है। वह लोगों को प्रेरणा देता है कि उन्हें परेशानियों से घबराना नहीं चाहिए और निरंतर अपने काम में लगे रहना चाहिए।

Scanned with ACE Scanner

प्र. 4. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(1) निम्नलिखित वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद पहचानकर लिखिए :

क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो?

उत्तर : तुम – सर्वनाम

(2) निम्नलिखित अव्ययों में से *किसी एक* अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

उत्तर : (i) धीरे-धीरे – रमेश धीरे-धीरे चल रहा था।

(ii) लेकिन – वह बाहर जाने वाला था, लेकिन नहीं गया।

(3) कृति पूर्ण कीजिए :

उत्तर :

शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
महात्मा	महा + आत्मा	स्वर संधि

अथवा

दुस्साहस	दुः + साहस	विसर्ग संधि

(4) निम्नलिखित वाक्यों में से *किसी एक* वाक्य की सहायक क्रिया पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए :

(i) हम आगे बढ़ गए।

(ii) मैंने दरवाजा खोल दिया।

उत्तर :

सहायक क्रिया	मूल क्रिया
(i) गए	जाना
(ii) दिया	देना

(5) निम्नलिखित में से *किसी एक* क्रिया का प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

उत्तर :

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) चलना	चलाना	चलवाना
(ii) मिलना	मिलाना	मिलवाना

(6) निम्नलिखित मुहावरों में से *किसी एक* मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

उत्तर :

(i) टाँग अड़ाना – अर्थ : बाधा डालना।

वाक्य : मेरे पड़ोसी की मेरे हर काम में टाँग अड़ाने की आदत है।

(ii) गला फाड़ना – अर्थ : शोर करना।

वाक्य : चोट लगने पर बच्चा गला फाड़कर रोने लगा।

अथवा

- **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :**

(काँप उठना; हाथ फेरना)

रोते हुए बच्चे को गोद में उठाकर माँ स्नेह करने लगी।

उत्तर : रोते हुए बच्चे को गोद में उठाकर माँ हाथ फेरने लगी।

Scanned with ACE Scanner

(7) निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारकों में से *कोई एक* कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए :

(i) मकान पर मकान लदे हैं।

(ii) रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं।

उत्तर :

कारक चिह्न	कारक भेद
(i) पर	अधिकरण कारक
(ii) के लिए	संप्रदान कारक

(8) निम्नलिखित वाक्य में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

हाँ मेरे पास बहुत से पत्र आते हैं

उत्तर : हाँ, मेरे पास बहुत से पत्र आते हैं।

(9) निम्नलिखित वाक्यों में से *किन्हीं दो* वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

(i) मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाता हूँ। *(सामान्य भविष्यकाल)*

उत्तर : मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाऊँगा।

(ii) दोनों ही देर तक फूट-फूटकर रोते रहे। *(अपूर्ण भूतकाल)*

उत्तर : दोनों ही देर तक फूट-फूटकर रो रहे थे।

(iii) वे पुस्तक शांति से पढ़ते हैं। *(पूर्ण वर्तमानकाल)*

उत्तर : उन्होंने पुस्तक शांति से पढ़ी है।

(10) (i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए :

मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं।

उत्तर : सरल वाक्य।

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में से *किसी एक* वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचनानुसार परिवर्तन कीजिए

(1) परिचय के बिना किसी को दाखिल करना चाहिए। *(निषेधार्थक वाक्य)*

उत्तर : परिचय के बिना किसी को दाखिल नहीं करना चाहिए।

(2) थोड़ी बातें हुईं। *(प्रश्नार्थक वाक्य)*

उत्तर : क्या थोड़ी बातें हुईं?

(11) निम्नलिखित वाक्यों में से *किन्हीं दो* वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए :

(i) घर में तख्त के रखे जाने का आवाज आता है।

उत्तर : घर में तख्त के रखे जाने की आवाज आती है।

(ii) करामत अली के आँखों में आँसू उतर आई।

उत्तर : करामत अली की आँखों में आँसू उतर आए।

(iii) ठीख उसी समय रूपा की आँखें खुला।

उत्तर : ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं।

Scanned with ACE Scanner

. 5. (अ) सूचनाओं के अनुसार लेखन कीजिए :

(1) पत्र-लेखन :

- **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए :**

राजेश/रजनी शर्मा, मातोश्री छात्रालय, चिचेवड से अपने छोटे भाई सुयश शर्मा 'नंदनवन' कॉलोनी, नांदेड को योग का महत्त्व समझाने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

उत्तर :

दिनांक : 25 नवंबर 20xx

प्रिय सुयश,

खुश रहो!

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है तुम भी स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

सुयश, मेरे कॉलेज में आजकल 'योग साधना शिविर' आयोजित किया गया है। छात्रावास के प्रांगण में सुबह सात बजे से एक योग गुरु हमें योग के विविध आसन सिखा रहे हैं। बहुत अच्छा लग रहा है। अब क्रिसमस की छुट्टियों में घर आऊँगा, तो कुछ योगासन तुम्हें भी सिखा दूँगा। ये आसन बड़े काम के हैं।

सुयश योगासन से शरीर स्वस्थ रहता है। किसी तरह का मानसिक तनाव नहीं रहता। बदन में चुस्ती-फुर्ती रहती है और ध्यान केंद्रित करने में बहुत मदद मिलती है। इससे पढ़ने में मन लगता है और बिना तनाव के प्रश्नों के उत्तर याद हो जाते हैं। योगासन करना बहुत आसान है। केवल पंद्रह-बीस मिनट में सब क्रियाएँ पूरी हो जाती हैं। योगासन सीख लेने से तुम्हें बहुत लाभ होगा। शेष मिलने पर... माता जी और पिता जी को प्रणाम!

तुम्हारा बड़ा भाई,

राजेश शर्मा

मातोश्री छात्रावास,

चिचेवड।

ई-मेल : rajesh@abc.com

सूचना : इस पुस्तक के पत्र-लेखन वाले भाग में दिनांक को अलग प्रकार से लिखा गया है, जिसमें वर्ष के अंतिम दो क्रमांक xx के रूप में दिए गए हैं। विद्यार्थी पत्र में दिनांक लिखते समय संबंधित वर्ष लिखें।

अथवा

Scanned with ACE Scanner

अनिकेत/अनिशा सोनवणे, गांधी मार्ग, सांगली से मा. व्यवस्थापक, मीरा स्पोर्ट्स, आझाद चौक, सातारा को क्रिकेट खेल सामग्री की माँग करने हेतु पत्र लिखता/लिखती है। प्र. 5

उत्तर :

दिनांक : 5 दिसंबर 20xx

प्रति,

मा. व्यवस्थापक,

मीरा स्पोर्ट्स,

आझाद चौक,

सातारा।

विषय : खेल सामग्री मँगाना।

महोदय,

मुझे अपने मुहल्ले की क्रिकेट टीम के लिए कुछ क्रिकेट सामग्री की आवश्यकता है। कृपया यह पत्र मिल ही निम्नलिखित खेल सामग्री मेरे पते पर भेजने का कष्ट करें। आपके नियमों के अनुसार एक हजार का का डिमांड ड्राफ्ट अलग पोस्ट से भेज रहा हूँ। शेष रकम सामग्री और बिल मिलने पर ऑनलाइन भेज। जाएगी।

कृपया उचित छूट अवश्य दें।

खेल सामग्री :

1. बेट – 3
2. पैड – चार जोड़ी
3. ग्लव्स – चार जोड़ी
4. बॉल – 6
5. गार्ड्स – 4
6. बेल्स – 4

आशा है, यह खेल सामग्री जल्द-से-जल्द भेजने का कष्ट करेंगे।

भवदीय,

अनिकेत सोनवणे

गांधी मार्ग,

सांगली।

ई-मेल : anikets@abc.com

(2) **गद्य आकलन – प्रश्ननिर्मिति :**

- **निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हों :**

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृतिपत्रिका से गद्यांश पढ़ें।*

उत्तर : तैयार किए हुए प्रश्न :

(1) ईश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई एक बड़ी देन क्या है?

(2) मनुष्य के जीवन का समाधान किस पर निर्भर है?

(3) दर्शनों का सारा प्रयास किसके लिए रहा है?

(4) गंभीर चिंतन करने वाले किसकी खोज करते रहते हैं?

Scanned with ACE Scanner

प्र. 5. (आ) (1) वृत्तांत-लेखन :

गुरुकृपा विद्यालय, बीड में मनाए गए 'स्वतंत्रता दिन' समारोह का 70 से 80 शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए। (वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख होना अनिवार्य है)

उत्तर :

बीड के गुरुकृपा विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस का शानदार समारोह

बीड के गुरुकृपा विद्यालय में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस समारोह बहुत धूमधाम से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता भूतपूर्व स्वतंत्रता सेनानी गंगाधर पाटील ने की।

कार्यक्रम का आरंभ सुबह सात बजे सरस्वती वंदना से हुआ। विद्यालय के शिक्षक गिरिधर गायकवाड ने अध्यक्ष महोदय का स्वागत किया तथा उनका संक्षिप्त परिचय दिया। इसके पश्चात छात्रों ने 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा' गीत गाया। विद्यालय के एन.सी.सी. के विद्यार्थियों ने परेड की तथा 'आजादी अमर रहे' और 'महात्मा गांधी की जय' के नारे लगाए।

विद्यालय के प्रधानाचार्य के निवेदन पर अध्यक्ष महोदय ने तिरंगा ध्वज फहराया। उपस्थित जनसमूह ने सावधान की मुद्रा में खड़े होकर ध्वज को सलामी दी।

गंगाधर पाटील तथा प्रधानाचार्य सूर्यकांत देशपांडे ने अपने-अपने भाषण में विद्यार्थियों को स्वतंत्रता दिवस का महत्त्व समझाया। उन्होंने आजादी के लिए अपना बलिदान देने वाले शहीदों की चर्चा की।

विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक अशोक साळवी ने अध्यक्ष महोदय के प्रति आभार प्रकट किया और उनको पुष्पहार पहनाया।

अंत में राष्ट्रगान के बाद स्वतंत्रता दिवस का शानदार समारोह आनंदपूर्ण वातावरण में सुबह 11 बजे समाप्त हुआ।

अथवा

● **कहानी-लेखन :**

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए :

सूचना : *विद्यार्थी कृपया कृत्रिपत्रिका से मुद्दे पढ़ें।*

उत्तर :

सूझ-बूझ का फल

राघोपुर आदिवासियों की आबादीवाला काफी बड़ा गाँव था। यह गाँव कस्बे और शहर से बहुत दूर था। इसलिए इस गाँव में विकास के नाम पर एक सेकेंडरी स्कूल चालू करने के अलावा कुछ भी नहीं किया गया था। गाँव के लड़के-लड़कियाँ इसी स्कूल में पढ़ते थे।

राघोपुर में पीने के पानी का भारी संकट था। लोगों को एक किलोमीटर दूर किसनपुर से पानी लाना पड़ता था। किसनपुर के सरपंच ने गाँववालों के सहयोग से एक बड़े कुएँ का निर्माण करवाया था। उस कुएँ से दूर-दूर के गाँवों के लोग पीने का पानी ले जाते थे।

राघोपुर की लड़कियाँ घर के काम-काज में तो मदद करती ही थीं, किसनपुर से पीने का पानी लाने का काम भी उन्हीं के जिम्मे होता था। इसलिए लड़कियों की पढ़ाई में इससे बाधा पहुँचती थी।

Scanned with ACE Scanner

एक दिन किसनपुर का सरपंच अपने गाँव के कुएँ की सफाई करवा रहा था। इसलिए राघोपुर की लड़कियों को कुएँ से पानी लेने में काफी देर हो गई। इसलिए लड़कियाँ उस दिन स्कूल नहीं जा सकीं।

सरपंच ने लड़कियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा, ''तुम सब अपने गाँव में कुआँ खोदना शुरू करो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'' लड़कियों को यह बात पसंद आई। उन्होंने आपस में चर्चा की। यह तय हुआ कि वे अपने गाँव में कुआँ खोदेंगी। उन्होंने यह बात गाँव के लोगों को बताई। लड़कियों ने उसी दिन से कुआँ खोदने की शुरुआत कर दी। वे पढ़ाई और काम-धाम से बचा समय कुआँ खोदने में लगाने लगीं। उनकी देखा-देखी गाँववाले भी इस काम के लिए जुटने लगे।

एक दिन कुआँ खुदकर तैयार हो गया, उससे पर्याप्त पानी निकल आया। अब गाँव की लड़कियों का समय दूसरे गाँव से पानी लाने में बर्बाद नहीं होता था। वे पूरे समय स्कूल में पढ़ाई करने लगी। गाँव के लोग भी बहुत प्रसन्न थे।

सीख : अपना हाथ जगन्नाथ।

---

(2) विज्ञापन-लेखन :

- **निम्नलिखित जानकारी के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए :**

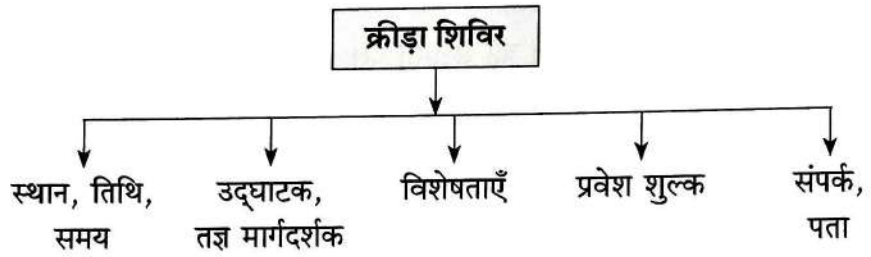

उत्तर :

विशेषज्ञों की देखरेख में

तरह-तरह के खेलों को विधिवत सीखने और खेलने का सुनहरा अवसर

खेल सीखिए : खिलाड़ी बनिए

आपके शहर में आयोजित हो रहा है –

क्रीड़ा शिविर

विशेषताएँ :

- अनुभवी और तज्ञ मार्गदर्शक
- व्यक्तिगत प्रशिक्षण
- खेलों के दाँव-पेंच की संपूर्ण जानकारी

कालावधि : 15 अप्रैल से 5 मई

समय : सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे।

स्थान : स्वराज्य मैदान, आजाद नगर, नाशिक
क्रीड़ापटु, 122, आजाद भवन, नाशिक

संपर्क : मो. 976xxxxx20

उद्घाटन : 15 अप्रैल, सुबह 9.00 बजे

उद्घाटनकर्ता : प्रसिद्ध क्रिकेट प्रशिक्षक 'संजय शर्मा'

प्रवेश – नि:शुल्क

Scanned with ACE Scanner

प्र. 5. (इ) निबंध-लेखन :

• निम्नलिखित विषयों में से *किसी* एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए :

(1) किसान की आत्मकथा

उत्तर :

किसान की आत्मकथा

मैं एक किसान हूँ। खेती मेरा व्यवसाय है। लोग मुझे 'धरती का लाल' और 'अन्नदाता' भी कहते हैं।

मैं गाँव में अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहता हूँ। मेरे खेत मेरे जीवन का सहारा हैं। मैं इन खेतों की जोताई, बोवाई करता हूँ। पौधे छोटे से बड़े हो जाते हैं, तो उनकी सिंचाई-निराई करता हूँ। फसल पक जाने पर कटाई-दँवाई करके अनाज घर में ले आता हूँ।

मेरा काम बहुत कठिन है। सावन-भादों की भरी बरसात में मैं अपने खेतों में काम करता हूँ। पूस-माघ की ठिठुरती सरदी में फसल की सिंचाई करता हूँ। जेठ-वैशाख की तपती लू में फसल की मँड़ाई करता हूँ। इतना करने के बाद कभी-कभी बाढ़, सूखे और असमय बरसात से फसल बरबाद हो जाती है। घर की पूँजी भी मिट्टी में मिल जाती है। भुखमरी की नौबत आ जाती है।

त्योहार मेरे जीवन में खुशियाँ लेकर आते हैं। हम अतिथियों, साधु-संतों और भिक्षा माँगने वालों की यथाशक्ति सेवा करते हैं। हमारा रहन-सहन बहुत सादा है। खेती से जो मिल जाता है, उसी से पेट-पालन, बच्चों की पढ़ाई, शादी-ब्याह जैसे काम निपटाने पड़ते हैं।

इन दिनों हम किसानों की दशा में थोड़ा सुधार हुआ है। सरकारी योजनाओं का लाभ जरूर मिल रहा है, पर अभी हमारी हालत में और सुधार होना चाहिए।

मैं भी अपने बच्चों को पढ़ाकर बड़ा आदमी बनाना चाहता हूँ। मेरी यह इच्छा जाने कब पूरी होगी? सोचता हूँ उम्मीद पर ही दुनिया कायम है।

(2) हमारी सैर

उत्तर :

हमारी सैर

गरमी की छुट्टियाँ थीं। मैंने पंढरपुर के अपने दोस्तों के साथ नदी की सैर की योजना बनाई। चंद्रभागा नदी हमारे घर के पास ही है। हम चार मित्र सुबह ही नदी की ओर निकल पड़े।

नदी के किनारे हमने अपनी साइकिलों में ताला लगाया और घाट पर पहुँच गए। नदी का दृश्य बहुत मनोरम था। रविवार का दिन था। इसलिए घाट पर स्त्री, पुरुष और बच्चों की भीड़ थी।

सभी नदी में किल्लोल कर रहे थे। कुछ लोग गहरे पानी में तैर रहे थे। जो लोग तैरना नहीं जानते थे, वे किनारे पर ही पानी में हाथ-पैर मार रहे थे। कुछ लोग एक-दूसरे पर पानी उछाल-उछालकर खेल रहे थे।

कुछ बच्चे नदी के किनारे बालू में खेल रहे थे। कुछ लड़कियाँ बालू के घरौंदे बना रही थीं। नदी में कई नावें तैर रही थीं। मछुआरों की भी एक नाव थी। वे मछलियाँ पकड़ने के लिए पानी में जाल फेंक रहे थे।

हम लोगों ने पानी में जाकर काफी देर तक ठंडे पानी का आनंद लिया। स्नान करने के बाद हम लोगों ने एक नाव किराये पर ली। हमने बारी-बारी से पतवार से नाव भी चलाई। नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचते-पहुँचते हम थक गए थे। कुछ देर वहाँ घूमकर हम नाव से फिर इस पार आ गए ।

तट के सुंदर दृश्य का आनंद लेकर हम चारों प्रसन्न मन से घर लौट आए।

चंद्रभागा नदी के किनारे बिताई उस सुबह के सैर की मीठी याद आज भी मेरे मन को प्रसन्नता से भर देती है।

Scanned with ACE Scanner

(3) यदि पुस्तकें न होतीं...

उत्तर :

यदि पुस्तकें न होतीं...

पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र हैं। ये हमें उचित मार्गदर्शन देने के साथ-साथ हमारा मनोरंजन भी करती हैं। बहुत-से लोग अपने खाली समय का सदुपयोग किताबें पढ़कर करते हैं यदि पुस्तकें न होतीं तो इन लोगों के मनोरंजन में बाधा आती।

पुस्तकें प्रेरणा का भंडार होती हैं। ऐसी पुस्तकें पढ़कर जीवन में कुछ अच्छा कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। यदि पुस्तकें न होतीं, तो ज्ञानार्जन असंभव-सा हो जाता। शिक्षा के लिए पुस्तकें बहुत जरूरी होती है। यदि पुस्तकें न होतीं, तो लिखित परीक्षा भी न होती और विद्यार्थियों के ज्ञान का मूल्यांकन करना संभव न होता।

पुस्तकों के द्वारा एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते सारे युग में फैल जाता है। पुस्तकें किसी भी विचार, संस्कार या भावना के प्रचार का शक्तिशाली माध्यम हैं। पुस्तकें मानव के एकांत की सबसे अच्छे साथी हैं। यदि पुस्तकें न होतीं, तो मानव जीवन व विकास से संबंधित जानकारी से हम वंचित रह जाते।

पुस्तकें ज्ञान का सागर हैं। हमारे वेद, पुराण, उपनिषद, भगवद्गीता, महाभारत, रामचरितमानस ऐसे ग्रंथ हैं, जिनमें जीवन का सार संकलित है। संत कबीरदास, तुलसीदास, रहीम आदि की रचनाएँ हमें दिन-प्रतिदिन के जीवन में अनेक तथ्यों से परिचित कराती हैं, नैतिकता सिखाती हैं।

यदि पुस्तकें न होतीं, तो हम अपने अतीत से अपरिचित रह जाते। पुस्तकें प्रकाश-स्तंभ हैं, जो समय के सागर में खड़ी की गई हैं। पुस्तकें न होतीं तो आज हम सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, वैचारिक रूप से इतने विकसित नहीं होते और न ही अपनी आने वाली पीढ़ी को एक उज्ज्वल भविष्य दे पाते।

★ ★ ★

Scanned with ACE Scanner